2018 - 19 ① शम्भु कुमार

कर्मकाण्ड एवं पौरोहित्य डिप्लोमा पाठ्यक्रम 2018–19

प्रथम प्रश्न पत्र – सैद्धान्तिक (देवपूजा एवं मुहूर्त्त)

(क) देवपूजा प्रयोग – 20

नित्यकर्म, सन्ध्या, इष्टस्मरण, गुरुवन्दना, कर्माङ्गवरूण पूजा, भूमिपूजन, दीपपूजन, आचमन, तिलक मन्त्र (यजमान एवं यजमान पत्नी के) ग्रन्थि बन्धन मन्त्र, भैरव नमस्कार, दिग्रक्षण (मन्त्रात्मक एवं पौराणिक) शंख पूजन, गरुडघण्टी पूजन, भद्रसूक्त पाठ, गणपति ध्यान, गणपति द्वादश नाम स्मरण, कर्मसंकल्प, गणपत्यादि पंचदेवपूजन, विशेषार्घदान, गौर्यादि षोडश मातृकापूजन, श्र्यादिसप्तवसोर्धारा पूजन, आभ्युदयिक नान्दीश्राद्ध प्रयोग, आचार्यःब्रह्माऋत्विग् वरण कलशस्थापन पंचपल्लव सप्तमृत्तिका, पंचरत्न, सर्वोषधि आदि का नाम परिचय, पुण्याहवाचन, हवनवेदी निर्माण प्रकार, कुशकण्डिका, पञ्चभुःसंस्कार, सूर्यादिनवग्रहपूजन, शिवादि अधिदेव तथा अग्न्यादि प्रत्यधि देवपूजन व ब्रह्मादिपंचदेवपूजन।

(ख) शिख्यादि चतु षष्टि पद वास्तुमण्डल देवता स्थापन 20

दिव्य योगिन्यादि चतुःषष्टि योगिनीमण्डल पूजन, अजरादिक्षेत्रपाल पूजन, ब्रह्मादि सर्वतोभद्रमण्डल देवता पूजन, लिंगतोभद्रमण्डल देवतापूजन, प्रतिमावस्त्रवेष्टन, प्रधानप्रतिमाघृतआलेपन, अग्न्युत्तारणविधि, प्रधान प्रतिमाप्राणप्रतिष्ठा, प्रधानपूजा आवाहनादिषोडशोपचार पूजा, हवनारम्भ, प्रजापति आदि देवों के निमित्त आहुति, अग्नि पूजन, वारूणी पंचाहुति, आवाहित देवों का नाममन्त्र, अथवा वैदिकमन्त्र–हवन श्रीसूक्तहवन, स्विष्टकृतहोम, इन्द्रादिदशदिक्पाल पूजन तथा बलिदान, क्षेत्रपाल पूजन एवं बलिदान, होमान्त उत्तरपूजन, स्रुव में उन्चास मरूद्गणपूजा, पूर्णाहूति निमित्त मृडनामाग्निपूजन, पूर्णाहूति, वसोद्धाराहोम, भस्मधारण, अग्न्युपस्थापन, यजमानअभिषेक, कामनापूर्तिसंकल्प, संस्रवप्राशन, ब्रह्मग्रन्थिविसर्जन, प्रणीतापात्र के जल से यजमान अभिषेक, पवित्री का अग्नि में प्रक्षेपण, प्रणीतान्युब्जीकरण, ब्रह्मा के लिए पूर्णपात्रदान, बर्हिहोम, दक्षिणादान संकल्प, न्यूनातिरिक्तदोष परिहारार्थ, गौघास, कपोतादिकों के लिए धान्यदान संकल्प, दीन अनाथादिकों के लिए दक्षिणा संकल्प आचार्यादिव्रती ब्राह्मणों के लिए दक्षिणादान संकल्प, ब्राह्मणबटुक, कुमारी आदि के भोजन निमित्त भोजन संकल्प, वैदिक आरार्तिक मन्त्र, प्रधान देवताओं की प्रचलित आरती, मन्त्र पुष्पांजली, आशीर्वादग्रहण, देवविसर्जन एवं पुनः मांगलिक कार्यों में आगमन की प्रार्थना।

(ग) विविध मुहूर्तज्ञान – 20

अवकहडाचक्रज्ञान, पंचांग परिचय, जन्माक्षर निर्माण विधि, इष्टकाल, सूर्यराशि अंश, लग्नराशि अंश, जन्मकुण्डली में ग्रहस्थापन प्रकार, चन्द्रकुण्डली, जन्माक्षर के अनुसार राशि राशिपति, नक्षत्र चरणानुसार नाम निर्धारण गण–नाडी–योनि एवं सूर्यराशिएवं नक्षत्रानुसार पाया

ज्ञान, चौघडिया मुहूर्त, राहूकालज्ञान, गोधूलि एवं अभिजित लग्न के मान का ज्ञान, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, उपनयन, विवाह मुहूर्त, सूर्य गुरू एवं चन्द्रशुद्धि ज्ञान, देवप्रतिष्ठा, व्यापार प्रारंभ, वाहन क्रय, प्रसूतिस्नान, जलवा, चूडापहनने का मुहूर्त, वाद प्रस्तुत करने के वार एवं नक्षत्र का ज्ञान, चौल संस्कार (जडूला) विद्यारम्भ आदि समाजोपयोगि विभिन्न संस्कारों के मुहूर्त।

जन्माक्षर निर्माण ज्ञान –

पंचांग साधन, तिथि तथा नक्षत्रों की संख्याए, अक्षांश तथा रेखांश से सूर्योदय साधन।

गुणमेलापक विधिज्ञान, कुण्डली मेलापक, शुभाशुभज्ञान, मांगलिक विचार, अनुष्ठानारम्भ, सेवारम्भ, क्रय, विक्रय, ऋण लेने एवं देने का मुहूर्त, विभिन्न दिशाओं में प्रस्थान हेतु, यात्रा दिवस एवं वार का ज्ञान, सम्मुखादि चन्द्रवास, कूपारम्भ मुहूर्त पंचक ज्ञान, सिद्धि योग कुयोगादि परिचय, अग्निवास, भद्रावास शिववासज्ञान।

इष्ट साधन, ग्रहस्पष्ट, लग्नस्पष्ट, राशि ज्ञान।

प्रायोगिक

(क) प्रथम प्रश्न पत्र का "क" भाग पर आधारित 40

पूजा पद्धतियों का प्रयोग, मण्डलादि तथा वेदी निर्माण करना जन्मकुण्डली निर्माण एवं संक्षिप्त फलादेश। मुहुर्त – व्यापार आरम्भ, गृह प्रवेश, शिलान्यास, चौलकर्म आदि का मुहूर्त निर्धारण करना।

यज्ञहवन विधि, पुष्पांजलि मन्त्रों का लयबद्ध वाचन करना, बलिविधान प्रयोग का ज्ञान।

अक्षांश–रेखांश का ज्ञान एवं लग्नस्पष्ट। जन्म समयानुसार जन्माक्षर बनाना तथा प्रतिष्ठित स्थानीय पुरोहितों के निर्देशन में सम्बन्धित विषय का प्रायोगिक अभ्यास एवं उसका परीक्षण।

सहायक ग्रन्थ –

1. ग्रह शान्ति
2. विविध मुहूर्त
3. पंचांग ज्ञान
4. ब्रह्मनित्यकर्म समुच्चय
5. नित्यकर्मपूजाप्रकाश
6. शीघ्रबोध

द्वितीय प्रश्न पत्र – सैद्धान्तिक (व्रतोद्यापन विधि, मन्त्र एवं स्तोत्र पाठ)

(क) व्रतोद्यापन विधि – 20

रामनवमी, जन्माष्टमी, विभिन्न एकादशी, प्रदोष, अनन्त चतुर्दशी, ऋषिपंचमी, सत्यनारायण व्रत कथा, पूर्णिमा, गंगोदक पूजन, तुलसी विवाह एवं विभिन्न व्रत उद्यापन विधि।

(ख) रुद्राष्टाध्यायी – सम्पूर्ण 20

(ग) स्तोत्रपाठ – 20

शिव, विष्णु, गणेश, लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती, श्री राम, श्रीकृष्ण, तथा सूक्त, विष्णुसहस्रनाम, गणेशाथर्वशीर्ष, सहस्रघट विधि, नवरात्र अनुष्ठान विधि, दुर्गासप्तशती का पाठ विधि एवं रुद्राभिषेक एवं स्तोत्रों के यतिगतिलयबद्ध पाठ का अभ्यास व पारिभाषिक ज्ञान।

प्रायोगिक

(ख) रुद्रसूक्त, पुरुषसूक्त, नमक चमक का शुद्धोच्चारण करना। 40

गणपतिअथर्वशीर्ष, दुर्गासप्तशती की शक्रादय स्तुति और नारायणी स्तुती का यति गतिलयबद्ध शुद्धोच्चारण करना।

सहायक ग्रन्थ –

1. व्रतोद्यापन चन्द्रिका
2. रुद्राष्टाध्यायी
3. स्तोत्र रत्नावली

तृतीय प्रश्न पत्र – सैद्धान्तिक (शान्ति, वास्तु, संस्कार)

(क) नक्षत्र शान्ति – 20

मूलअश्लेषामघाज्येष्ठादिगण्डान्तनक्षत्रशान्ति, शिलान्यास विधि, वास्तुशान्ति, गृहप्रवेश पर्यन्त।

महामृत्युंजय जपविधि, महालक्ष्मीपूजन, कुबेरपूजन, तुलापूजा, बहीवसनापूजन, सार्धनवचण्डीप्रयोग, जन्मदिवसपूजन।

(ख) संस्कार प्रकरण – उपनयन समावर्तन पर्यन्त। 20

विवाह संस्कार – वाग्दान (तिलक दस्तूर पूजा) लग्नपत्र लेखन, विनायक सांकडी पूजा, स्तम्भ प्रष्ठिा (थामरोपन) वरवरण, विष्टर – पाद्य –अर्ध्य आचमन–मधुपर्क दानादि हस्तलेपन (पीलाहाथ), कन्यादान, पाणिग्रहण, ग्रन्थिबन्धन प्रायश्चित होम, जया–अभ्यातान–राष्ट्रभृत, पंचाहुति, लाजाहोम, सप्तपदी, वरकन्याप्रतिज्ञावचन, ध्रुवदर्शन, शाखोचार (मंगलाष्टक) सिन्दूरदान, फेरपाटा।

(ग) अन्तिम संस्कार – श्राद्धविधि 20

पंचपिण्डदान क्रमशः – मृतस्थान, –द्वार–चतुष्पथ (चौराहा) विश्रामस्थल–श्मशान आदि। शवदाह एवं मुखाग्निदान कपालक्रियाविधि। अस्थि संचय (फूल चुनना)

दसगात्र एवं नारायणबलिकर्म, सपिण्डीकरणश्राद्ध, पाक्षिक–मासिक–षाण्मासिक एवं वार्षिकश्राद्ध, पितृमेलनश्राद्ध, शीशीपूजन, पवित्रीनिर्माण, चटमोटकनिर्माण, गो–काक–श्वान–कीटपतंग–अतिथि पंचग्रास विधि।

प्रायोगिक

(ग) 40

उपनयनविधि, पंचगव्यनिर्माणविधि, मेखलानिर्माणप्रकार, भिक्षाचरणविधान, वेदारम्भ विधि का प्रायोगिक अभ्यास। वरवरण, कन्यादान विधि, पाणिग्रहण विधि, अश्मारोहण, परिक्रमण, सप्तवचनों का उच्चारण, शाखोच्चार (मंगलाष्टक) यतिगतिलयबद्ध उच्चारण की शैली का अभ्यास।

मूलादिगण्डान्तशान्तिविधि का नक्षत्र स्थापन प्रायोगिक अभ्यास एवं अभिषेक विधि। नवजात शिशु के पैर पूजा एवं प्रार्थना का प्रायोगिक ज्ञान।

सहायक ग्रन्थ –

1. शान्ति प्रकाश
2. षोडश संस्कार
3. उत्तरकर्म प्रयोग
4. श्राद्ध पारिजात